Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. - 13

उपन्यास : स्वरूप और विकास

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Munni Chaudhary*, M.Phil.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 380/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the “Special Discount Schemes” being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay “Cash on Delivery” (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

<u>Content</u>

उपन्यास : स्वरूप और विकास

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	आख्यान के विविध रूप और उपन्यास	1
2.	उपन्यास का अर्थ और स्वरूप	11
3.	उपन्यास का उदय और उसके कारण	17
4.	उपन्यास और अन्य विधाएँ	28
5.	उपन्यास : वस्तु और शिल्प	40
6.	उपन्यास की भाषिक संरचना	57
7.	उपन्यास : वर्गीकरण और उसके विभिन्न आधार	72
8.	उपन्यास की आलोचना दृष्टियाँ	88

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

9. विश्व साहित्य में उपन्यास का उदय 101

10. उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास–I 113

11. उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास–II 123

12. बीसवीं सदी के उपन्यास 133

13. भारतीय उपन्यास की अवधारणा 145

14. नवजागरण और भारतीय उपन्यास 157

15. राष्ट्रीय आन्दोलन और भारतीय उपन्यास 167

16. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यास 178

17. नवजागरण और हिन्दी उपन्यास का उदय 194

18. राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास 213

19. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास 230

20. हिन्दी उपन्यास-आलोचना का विकास 247

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

उपन्यास : स्वरूप और विकास

M.H.D.-13

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

***नोट :** निम्नलिखित में से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं।*

प्रश्न 1. उपन्यास के स्वरूप पर पाश्चात्य विद्वानों के मतों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–किसी भी साहित्य-प्रवृत्ति के पीछे उसकी तात्कालिक परिस्थितियाँ काम करती हैं, यह सत्य है। यह भी सत्य है कि बिना किसी कारण का कोई भी कार्य संभव नहीं होता। उपन्यास उन्नीसवीं सदी की साहित्यिक विधा है। आखिर वे कौन-से कारण, कौन-सी परिस्थितियाँ अनुकूल रहीं, जिसके कारण हिन्दी उपन्यास का उदय हुआ। इस अध्याय में इन कारणों की जाँच-पड़ताल के साथ-साथ ऐतिहासिक प्रक्रिया को भी देखा-परखा जायेगा। उपन्यास के उदय के पीछे भी समाज और युग की विशिष्ट परिस्थितियों का योग है। उपन्यास पूँजीवादी युग में विकसित होने वाला साहित्य रूप है। प्रसिद्ध विद्वान हेगेल की व्याख्या है कि उपन्यास पूँजीवादी समाज में संभव होने वाला एक विशेष साहित्य-रूप है जो आधुनिक युग में महाकाव्य का विकल्प है और एक अर्थ में मध्यवर्ग का महाकाव्य है। हम देखेंगे कि उन्नीसवीं सदी में उपन्यास कब और क्यों आया।

उन्नीसवीं सदी में उपन्यास–यूरोप में उपन्यास का उदय या लेखन अठारहवीं सदी में ही हो गया था। भारत और भारतीय भाषाओं में इसकी शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई। भारत में उपन्यास का उदय आधुनिक काल में हुआ जब ब्रिटिश सत्ता ने सम्पूर्ण भारत और भारतीय भू-भाग को अपने कब्जे में ले लिया था। इसीलिए उपन्यास आधुनिक काल की देन है। 'आधुनिक काल' भारतीय इतिहास व संस्कृति ही नहीं, जीवन के तमाम पहलुओं पर अंग्रेजों के माध्यम से परिलक्षित हुआ। अंग्रेजों के संपर्क से ही भारत में आधुनिक विशेषताओं का प्रवेश हुआ। उन्होंने भारत में आकर अनेक परिवर्तन किये, जिससे समाज की आर्थिक संरचना थोड़ी बदली। समाज में जमींदार, महाजन, किसान, मजदूर आदि वर्ग नवीन रूप धारण किया। नये वर्ग सम्बन्ध बने। उपनिवेशवाद ने अपना ढाँचा बनाया। परिणामस्वरूप, अनेक आधुनिक कही जाने वाली वस्तुओं का प्रवेश हुआ। प्रेस की स्थापना हुई और छपाई की कला विकसित हुई। अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकली। अंग्रेजी शिक्षा लागू हुई। मध्य वर्ग सामने आया। स्त्री शिक्षा का विस्तार हुआ। इस तरह भारत आधुनिक युग में प्रवेश किया।

पूँजीवादी सभ्यता–पूँजीवादी सभ्यता अंग्रेजों की देन है। पूँजीवाद के विकास के दौर में राजनीति और बाजार की महत्ता प्रकट होने लगती है। पूरी व्यवस्था पूँजी से तय होती है। सामंतवाद के ह्रास के साथ पूँजीवाद विकसित हुआ और महाकाव्य के पतन के साथ उपन्यास का उदय हुआ। कहना चाहिए कि पूँजीवाद और उपन्यास का विकास साथ-साथ हुआ। दूसरे शब्दों में, पूँजीवाद उपन्यास के विकास में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। **रैल्फ फॉक्स** ने ठीक ही कहा है, "*उपन्यास विश्व की कल्पना-प्रसूत संस्कृति को बुर्जुआ अथवा पूँजीवादी सभ्यता की सबसे महत्त्वपूर्ण देन है।*"

आधुनिक मध्यवर्ग का उदय–सामंतवाद के ह्रास के साथ पूँजीवादी व आधुनिक मध्यवर्ग का उदय हुआ। यह मध्यवर्ग शिक्षित और बौद्धिक था। इस वर्ग की नींव अंग्रेजी सभ्यता-संस्कृति ने रखी थी। यह पढ़ा-लिखा वर्ग विश्व मानवता से प्रेरित था। यही वर्ग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वाहक था। उसमें क्रांति की ललक होती है, साथ ही उसमें दुर्बलताएं भी होती हैं। यह वर्ग झूठ बोलने के साथ-साथ मिथ्या गर्व की अनुभूति से भी ग्रस्त होता है। चरित्र की जटिलता के कारण यह वर्ग उपन्यास की महत्त्वपूर्ण संभावना बन जाता है। यही वर्ग उपन्यास का सबसे बड़ा उपभोक्ता भी होता है। उपन्यास की लोकप्रियता, बाजार में स्वीकृति जैसे प्रश्नों से भी वह जुड़ा हुआ है।

हीगेल ने कहा था, "*उपन्यास मध्यवर्ग का महाकाव्य है।*" वास्तव में, उपन्यास आधुनिक युग और मध्यवर्ग का महाकाव्य है। आधुनिक युग में उपन्यास महाकाव्य का विकल्प है। प्राचीन से लेकर मध्ययुग तक महाकाव्य की प्रधानता रही है। पहले महाकाव्य की जो भूमिका थी वही भूमिका आधुनिक युग में उपन्यास की है। उपन्यास मध्यवर्ग की दास्तान है। प्रेमचंद जहाँ उपन्यास में किसान चरित्र की महागाथा लिखना चाहते हैं वहीं मध्यवर्ग की महागाथा भी लिखना चाहते हैं। वस्तुतः वे सफल रहे हैं। हिन्दी का उपन्यास साहित्य भी मध्यवर्ग को समर्पित है।

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार उपन्यास की परिभाषा उपन्यास के सन्दर्भ में किसी निकर्ष में पहुँचने से पूर्ण कतिपय पाश्चात्य विद्वानों की एतत् सम्बन्धी धारणा की प्रस्तुति नितान्त आवश्यक है। राल्फ फॉक्स के अनुसार, "उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य नहीं है, यह मानव जीवन का गद्य है।"

फील्डिंग के अनुसार उपन्यास एक मनोरंजन पूर्ण गद्य महाकाव्य है। बेकर ने कहा है, "उपन्यास वह रचना है, जिसमें किसी कल्पित गद्य कथा के द्वारा मानव जीवन की व्याख्या की गयी हो।" प्रिस्टले के अनुसार उपन्यास, "उपन्यास गद्य में लिखी कथा है जिसमें प्रधानतः काल्पनिक पात्र और घटनाएँ रहती हैं। यह जीवन का अत्यन्त विस्तृत और विशद दपर्ण है और साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसका क्षेत्र व्यापक होता है। उपन्यास को हम ऐसे कथानक के रूप में ले सकते हैं जो सरल और शुद्ध अथवा किसी जीवन दर्शन का माध्यम हो।"

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि उपन्यास आधुनिक युग का अति समादृत साहित्य रूप है। उपन्यास की शैली की स्वाभाविकता उसकी रोचकता बनाये रखने में सहायक होती है। उपन्यास में उपन्यासकार का निजी जीवन दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। लेखक की जीवन और जगत की अनुभूति जितनी व्यापक और गहरी होगी, उसका औपन्यासिक वर्णन भी उतना ही व्यापक और गम्भीर होगा।

उपन्यास यथार्थ जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यथार्थ से तात्पर्य है कि जीवन जैसा दीखता या अनुभव होता है। इस जाने पहचाने जीवन के अनुभव को कल्पित घटनाओं तथा पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार रूपायित करता है। यह रूपायन कल्पित होते हुए भी मूलतः यथार्थ है।

उपन्यास का मूल तत्व मानव चरित्र है। इसमें मनुष्य के चरित्र का बाह्य पक्ष या आचरण पक्ष तो प्रस्तुत होता ही है, साथ ही उसके मन की विभिन्न स्थितियों का उद्घाटन भी होता है। उपन्यासकार जीवन की कथा कहकर पाठकों की उत्सुकता जगाता है। बाद में उसी जिज्ञासा का शमन मानव चरित्र के आन्तरिक उद्घाटन तथा परिस्थितियों को प्रकाश में लाकर करता है। इस प्रकार सरस कथा होते हुए भी वह जीवन का गहन गंभीर विश्लेषण करता है।

प्रश्न 2. उपन्यास के प्रमुख तत्वों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, 'कथानक का निर्धारण', पृष्ठ-43, 'उपन्यास : पात्रों का विकास', पृष्ठ-44, 'चरित्र चित्रण की विभिन्न पद्धतियां', पृष्ठ-46, 'कालिक संरचना', पृष्ठ-48, 'शिल्पगत वैशिष्ट्य का आधार'

प्रश्न 3. हिन्दी उपन्यास के अर्थ एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसकी लेखन परम्परा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'उपन्यास के विभिन्न नामांतरण', पृष्ठ-12, 'उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप' तथा अध्याय-17, पृष्ठ-200, 'हिंदी भाषी क्षेत्र में नवजागरण', पृष्ठ-209, प्रश्न 4

प्रश्न 4. उपन्यास में यथार्थ के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, प्रश्न 2

प्रश्न 5. उपन्यास की कथावस्तु के आधार पर उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-50, प्रश्न 1

प्रश्न 6. उपन्यास आलोचना की प्रमुख विचारधाराओं को आरेखित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-88, 'उपन्यास की आलोचना का वैचारिक आधार', पृष्ठ-96, प्रश्न 1, पृष्ठ-98, प्रश्न 2, पृष्ठ-99, प्रश्न 3

प्रश्न 7. उपन्यास के विकास में प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-135, 'प्रथम विश्वयुद्ध और उपन्यास में बदलाव'

प्रश्न 8. उपन्यास में कथावस्तु के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-83, प्रश्न 2

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) जादुई यथार्थवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-94, 'जादुई यथार्थवाद'

(ख) गोदान

उत्तर–साहित्यकार जब किसी विषय पर लिखता है तो उसका कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य होता है। फिर उपन्यास तो साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो जीवन के विविध रंगों को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। उपन्यास में जीवन की विभिन्न स्थितियों का वर्णन होता है। वे स्थितियां-परिस्थितियां अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी। प्रायः बुरी परिस्थितियाँ उपन्यास में ध्यानाकर्षण का केंद्र बन जाती हैं। यही उपन्यास में वर्णित समस्याएं होती हैं और इनसे ही उपन्यास का मूल भाव या उद्देश्य उभरकर सामने आता है। इस विषय में गोदान कोई अपवाद नहीं है।

मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज में प्रचलित अनेक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उनकी कोई भी रचना ऐसी नहीं है, जो उद्देश्यपरक न हो। कुछ रचनाओं में वे आदर्शवादी हैं, तो वे नैतिक संदेश देते हैं और कुछ रचनाओं में वे यथार्थवादी हैं, तो वे जीवन व समाज में व्याप्त बुराइयों की तरफ पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं और उनको दूर करने का पाठकों से आग्रह करते हैं, परंतु यह आग्रह है स्पष्ट नहीं है वरन पाठक खुद ही उन बुराइयों से नफरत करने लगता है और उनको समाप्त करने का पक्षधर बन जाता है।

गोदान एक वृहद उपन्यास है। यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक साथ समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों का समावेश हो गया है। वस्तुतः प्रेमचंद समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाना चाहते हैं परंतु वे ऐसा स्पष्ट रूप से आग्रह ना करके समाज में व्याप्त बुराइयों के दुष्प्रभावों को दिखाते हैं। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार समाज की अनेक प्रथाएं होरी जैसे किसानों के लिए दमन और शोषण का साधन बन गई हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

उपन्यास : स्वरूप और विकास

आख्यान के विविध रूप और उपन्यास

1

इस अध्याय में आप आख्यान के विविध रूपों की जानकारी पायेंगे। उपन्यास के पूर्व की स्थिति आख्यान की रही है ऐसा माना जाता है। भारत में 'उपन्यास' शब्द और एक विशेष विधा के रूप में प्रचलन के पूर्व इससे मिलते-जुलते स्वरूप को आख्यान कहा जाता था। यहां आख्यान के विविध रूप प्रचलित थे। वैसे गद्य आधुनिक युग की देन है और उपन्यास गद्य की एक सशक्त विधा है। उपन्यास यूरोप की देन है, जो बांग्ला साहित्य में अनुवाद के माध्यम से आया। 'उपन्यास' शब्द बांग्ला साहित्य की देन है। हिन्दी साहित्यकारों ने अंग्रेजी-अनुदित व बांग्ला के उपन्यासों के स्वरूप को ज्यों-का-त्यों अपनाया और इस विधा को 'उपन्यास' कहना शुरू किया। मुद्रण के विकास के पूर्व भारत में गद्य में रचनाएं गौण रूप में मिलती हैं। यही कारण है कि आख्यान के विविध रूपों का व्यापक विस्तार न हो सका। कहना अनुचित न होगा कि मुद्रण व गद्य के विकास ने ही उपन्यास को जन्म दिया। गद्य का इतना व्यापक विस्तार हुआ कि हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने आधुनिक काल को 'गद्य-काल' की संज्ञा दे दी। व्यापक स्तर पर देखें तो पायेंगे कि उपन्यास औद्योगिक सभ्यता, मध्यवर्ग का उदय, प्रेस की स्थापना और गद्य रूप की व्यापक स्वीकृति से विराट फलक प्राप्त कर सका है। इस विधा की व्यापक स्वीकृति के कारण 'पद्य रूप' गौण पड़ता गया है और गद्य रूप विस्तृत होता चला गया है। यही कारण है कि आज उपन्यास को आधुनिक जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। उपन्यास अपने आरम्भिक स्वरूप में सदैव परिवर्तन करता रहा है। आरम्भ में उपन्यास मनोरंजन, आदर्श व शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखा जाता था, पर शीघ्र ही उपन्यास अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने में समर्थ हुआ और यथार्थवादी जमीन पकड़कर चलने लगा। आज उपन्यास साहित्य यथार्थ के विविध रूपों में लिखा जा रहा है। यह व्यक्ति केन्द्रित तो हुआ ही है, समाज के उपेक्षित वर्ग को भी अपने कथानकों में समाहित कर चुका है।

उपन्यास यूरोप की देन है। रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है। उन्होंने इसे 'अंग्रेजी ढंग' का पहला मौलिक उपन्यास बताया है। दरअसल, 'उपन्यास' नामक गद्य विधा बांग्ला साहित्य से लिया गया है और बांग्ला साहित्य में यह विधा अंग्रेजी साहित्य से अनुवाद के माध्यम से आया है। अत: इस नवीन गद्य विधा का स्वरूप सम्पूर्णत: अंग्रेजी साहित्य से लिया गया है। उपन्यास हिन्दी में अनुवाद के रास्ते आने वाला नया गद्य रूप है। इसका स्वरूप भारतीय आख्यान से बिल्कुल अलग और नया है। इसी कारण आख्यान को उपन्यास नहीं कहा जाता। रामचंद्र शुक्ल ने भी उपन्यास विधा की नवीनता के आधार पर ही 'परीक्षा गुरु' को पहला मौलिक उपन्यास पाया है। अलबत्ता हिन्दी साहित्य के

इतिहासकारों ने उपन्यास को भारतीय गद्य-विधा सिद्ध करने के लिए आख्यान के विविध रूपों में सूत्र ढूँढ़ने का प्रयास किया है।

उद्देश्य 'आख्यान' शब्द की सीमा और सार्थकता पर विचार करने के साथ-साथ उसके अर्थ तथा परम्परा की भी चर्चा हम इस अध्याय में करेंगे। इतना ही नहीं, हम 'उपन्यास' नामक विधा के रूप की विशिष्टता पर भी विचार करेंगे। 'उपन्यास' आख्यान के विविध रूपों का ज्यों-का-त्यों रूप नहीं है, पर उससे प्रभावित अवश्य है। विशिष्टत: यह आधुनिक जीवन यथार्थ से स्फूर्ति प्राप्त करता है। हिन्दी 'उपन्यास' अंग्रेजी ढंग के 'नावेल', गुजराती के 'नवल कथा', मराठी के 'कादम्बरी' तथा बांग्ला के 'उपन्यास' से प्रभावित है। यह आख्यान के अनेक रूपों में ही एक है, पर इसकी अपनी निजी विशेषताएं हैं। मेरा उद्देश्य है कि इस अध्याय के पढ़ने से आप उपन्यास के पूर्व प्रचलित रूपों की सही पहचान कर सकने में समर्थ हों।

आख्यान : अर्थ और परम्परा

कथन, निवेदन, कथा-कहानी, पुरावृत्त कथन, ऐतिहासिक-पौराणिक-कथा-आख्यान के सामान्य अर्थ हैं और इसके पर्याय हैं कथा, कथानक, आख्यायिका, वृतांत। आख्यान की अपनी परम्परा रही है। यह भी ध्यान देने की बात है कि आख्यान के ये सभी प्रतिरूप हिन्दी में मिलते हैं। अन्य भाषाओं में और दूसरे भाषा-भाषी प्रान्तों में कादम्बरी, नवल कथा आदि नामों से मिलता है। इनमें भिन्नता आकार-प्रकार के साथ-साथ स्वरूप को लेकर भी है; जैसे 'महाभारत' एक प्रकार का आख्यान है तो कादम्बरी दूसरे प्रकार का आख्यान है। उद्देश्य की दृष्टि से भी परस्पर भिन्नता है। मूलत: आख्यान इतिहास-पुराण की प्रामाणिकता लिये होता है, उसमें कल्पना का पुट गौण रहता है। उनका उद्देश्य जनता व समाज को शिक्षा देना होता था। वह इतना आदर्श होता था कि वास्तविकता और यथार्थ गौण पड़ जाता था। मूलत: ध्यान रखा जाता था कि कथा प्रामाणिक हो, जनप्रिय हो और उसके कारण रसोद्बोधन में बाधा न उपस्थित हो। जैसे नाटक 'ख्यातवृत' में, ख्यातवृत का मुख्य कारण यह था कि उस वृत या आख्यान के विरुद्ध जाना संभव न हो। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी हैं। 'राम' जैसे पौराणिक चरित्र के अनेक आख्यान हैं और कल्पना का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि नायक लेखक की अपनी निजी सोच, धारणा, विचारधारा का प्रतिनिधि बन गया है। लेखक नायक का अनुगामी नहीं है बल्कि नायक ही लेखक का अनुगामी है। वह अपने मूल रूप में काफी बदल गया है। यह इतिहास-पुराण का एक पात्र मात्र रह गया है, उसका चरित्र-स्वरूप पूर्णत: भिन्न है। उदाहरण के लिए भगवान सिंह कृत 'अपने-अपने राम' नामक उपन्यास को लिया जा सकता है। वस्तुत: आधुनिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र या इतिहास में इन वृत्तों की प्रामाणिक ख्याति को नष्ट कर दिया है। इसीलिए उपन्यास आख्यान परम्परा में होकर भी नया साहित्य रूप है। वह अंग्रेजी ढंग का है। यहां इतिहास-कल्पना भी सर्जनात्मक रूप ले लेती है। उपन्यास का मूल-स्वरूप गल्पीय है; इसीलिए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उपन्यास को गल्प की संज्ञा दी है। गल्प में कल्पना प्रधान होता है।

उपन्यास विधा : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने उपन्यास रचना के स्रोत को भारतीय आख्यान के विविध रूपों से जोड़ने का प्रयास किया है; जैसे किसी ने रामायण-महाभारत से, किसी ने गुणाढ्य की वृहत्कथा से, किसी ने बौद्ध जातक कथाओं से, किसी ने बाणभट्ट की कादम्बरी से तो किसी ने अरबी-फारसी की दास्तान-परम्परा से। यह सच है कि भारतीय उपन्यास इन रूपों से प्रभावित है, पर सर्वाधिक प्रभाव 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' से ग्रहण किया है। भारतीय उपन्यास का जन्म आधुनिक युग की वास्तविकता से हुआ है, जिसके मूल में 'अंग्रेजी ढंग' है। आधुनिक युग की परिस्थितियों ने ही हिन्दी उपन्यास को जन्म दिया है। लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) को रामचंद्र शुक्ल ने पहला अंग्रेजी ढंग का नावेल कहा है। यह सच है लेकिन उस समय के सभी आरंभिक उपन्यास अंग्रेजी ढंग के नहीं बन पाये हैं। ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामा स्वप्न' को किसी भी अर्थ में अंग्रेजी ढंग का नावेल नहीं कहा जा सकता। स्वयं लेखक ने इसे 'गद्य प्रधान चार खण्डों में एक कल्पना' कहा है। हालांकि कुछ लोग 'परीक्षा गुरु' से पूर्व की रचनाओं यथा 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) और 'भाग्यवती' (1872) को हिन्दी का पहला उपन्यास सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। असलियत यह है कि ये दोनों रचनाएँ स्त्रियोचित शिक्षा ग्रंथ हैं। इस समय शिक्षा मूलक सुधारवाद, मनोरंजन-प्रधान व तिलस्मी-ऐय्यारी के उपन्यासों की विपुलता मिलती है। 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान' (बालकृष्ण भट्ट); 'निस्सहाय हिन्दू' (राधाकृष्ण दास) आदि उपन्यास शिक्षाप्रद व सुधारवाद से प्रेरित हैं। देवकीनंदन खत्री का उपन्यास 'चंद्रकांता' (1891) उस समय के सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय उपन्यासों में सर्वोपरि है। यह तिलस्मी उपन्यास है। किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'प्रणयिनी परिणय' और 'हृदयहारिणी' भी काफी लोकप्रिय व चर्चित रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक डेढ़ दशक तक उपर्युक्त कोटि के उपन्यासों का विपुल मात्रा में सृजन होता रहा है। 'उपन्यास' शब्द 'उप' समीप और 'न्यास' थाती के योग से बना है जिसका अर्थ होता है (मनुष्य के) निकट रखी हुई वस्तु, अर्थात वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गयी है। यही उपन्यास की वास्तविक विशेषता है और आधुनिक उपन्यास इसी अर्थ में उपन्यास है। उपन्यास की इस वास्तविक जमीन की पहचान सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने की। प्रेमचंद-पूर्व के उपन्यासकारों का उद्देश्य था कि वे अपनी बात पाठकों को रोचक ढंग से समझा सकें। इसीलिए तत्कालीन उपन्यासों में यह प्रवृत्ति प्रधान रूप से विद्यमान

www.neerajbooks.com

है जबकि औपन्यासिक कला गौण है। बाद में प्रेमचन्द तक आते-आते उपन्यासकारों का ध्यान उपन्यास के शिल्प को विकसित करने की ओर गया। यहाँ शिल्प से तात्पर्य न सिर्फ उपन्यास की कला से है बल्कि उपन्यास की अतंर्वस्तु में निहित उस नजरिये से भी है जो हर दौर में परिस्थितियों के साथ अंतर्क्रिया में बदलता रहा है। दो-एक प्रवृत्ति किसी विधागत साहित्य के लिए तीस-पैंतीस वर्ष का समय बहुत अधिक होता है। अन्ततः प्रवृत्ति में परिवर्तन हुआ और प्रेमचन्द युग आया।

प्रेमचन्द युग यथार्थवादी उपन्यासों का युग रहा है, जिसमें सोद्देश्यता, सामाजिकता, मनोवैज्ञानिकता और राष्ट्रीयता देखने को मिलती है। स्वयं प्रेमचन्द्र के उपन्यास आदर्श और यथार्थ का सुन्दर समन्वय स्थापित करते हैं। प्रेमचंद (1880 1936) 'सेवा सदन' (1918), 'प्रेमाश्रम' (1922), 'रंगभूमि' (1924), 'गबन' (1930), 'कर्मभूमि' (1932), 'गोदान' (1936) लिखने के क्रम में मुख्यतः गांधीवाद और अंततः मार्क्सवाद से प्रभावित हुए। उनके उपन्यासों में स्वाधीनता संघर्ष काल का इतिहास तो मिलता ही है, 'गोदान' में किसान जीवन की त्रासदी का भी चित्रण मिलता है। 'निर्मला' में स्त्री चेतना का स्वर मुखर हुआ है। जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में 'कंकाल' यथार्थपरक है तो 'तितली' भावात्मक आदर्शवाद से प्रेरित है। जैनेन्द्र कुमार के आरम्भिक उपन्यासों 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र' के साथ ही एक नया शिल्प विकसित हुआ। वे नैतिकवादी दृष्टि के लेखक के रूप में जाने गये। उन्हें मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का जनक भी कहा गया। वृन्दावन लाल वर्मा ने 'गढ़कुंडार' और 'मृगनयनी' तथा भगवतीचरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' लिखकर सौन्दर्य-प्रेम केन्द्रित ऐतिहासिक उपन्यास की रूपरेखा बनायी। वस्तुतः प्रेमचन्द युग के अंतिम कुछेक वर्षों में ही हिन्दी उपन्यास साहित्य में यथार्थ के विविध आयाम खुलने लग गये थे।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में सर्वाधिक चर्चित रहा है। उन्होंने 'शेखर एक जीवनी' (1941) लिखकर जहां रोमांटिक विद्रोह की कथा का बीज बोते हैं, वहीं एक नये काव्यात्मक गद्य का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। उनका 'नदी के द्वीप' (1951) एक प्रेमकथा है तो 'अपने-अपने अजनबी' (1961) जीवन और अस्तित्व के जटिल प्रश्न खड़ा करता है। इलाचंद्र जोशी कृत 'संन्यासी' (1941) मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों की नींव रखता है। स्वतंत्रता-पूर्व के अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1946), 'दिव्या' (यशपाल, 1946), 'गिरती दीवारें' (उपेन्द्रनाथ अश्क, 1940)। इस प्रकार, प्रेमचन्दोत्तर और स्वाधीनता-पूर्व काल में हिन्दी उपन्यास साहित्य में यथार्थ के विविध प्रयोग हो चुके थे। मसलन मनोवैज्ञानिक उपन्यास, समाजवादी और सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास और आंचलिक उपन्यास।

स्वातंत्र्योत्तर काल में उपन्यास की दो धारा और बनी आंचलिक उपन्यास और अस्तित्ववादी उपन्यास। फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' (1954) के प्रकाशन से आंचलिक उपन्यास की नवीन धारा बनी। हालांकि अंचल विशेष को केन्द्र में रखकर शिवपूजन सहाय ने 'देहाती दुनिया' 1926 में ही लिख चुके थे; पर तब वाद का कोई रूप नहीं बन पाया था। अब जब आंचलिक उपन्यासों की बढ़ती प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर उसकी परंपरा की खोज शुरू हुई तो देहाती दुनिया आंचलिक उपन्यास की प्रथम रचना सिद्ध हुई है। 'आंचलिक' शब्द अंचल विशेष का प्रातिनिधिक है। जब कोई उपन्यास किसी अंचल विशेष को केन्द्र में रखकर लिखा गया हो और जिसमें उस अंचल विशेष की बोली-बानी, संस्कृति, रीति-रिवाज, गीत-गान और कथाओं के आधार पर कथा का केन्द्र या नायक लेकर गाँव की जिन्दगी या सीमांत क्षेत्रों की जिन्दगी का सघन चित्रण किया जाता है तो उसे आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। ऐसे उपन्यासों की संख्या बहुत बड़ी है, जिसमें 'सागर, लहरें और मनुष्य' उदय शंकर भट्ट, 'परती परीकथा' (1957) फणीश्वरनाथ 'रेणु', 'बहती गंगा' रुद्र, बलचनमा', 'नयी पौध' नागार्जुन; 'बूंद और समुद्र' अमृतलाल नागर, 'रागदरबारी' (1968) श्रीलाल शुक्ल, 'आधा गाँव' राही मासूम रजा, 'कालाजल शानी', 'अलग-अलग वैतरणी' शिव प्रसाद सिंह, 'कब तक पुकारूं' रांगेय राघव महत्त्वपूर्ण है।

अस्तित्ववादी उपन्यास के पुरोधा हैं हजारी प्रसाद द्विवेदी। उन्होंने 'अपने-अपने अजनबी' लिखकर इस नवीन वाद का सूत्रपात किया है। अब तक कोई दूसरा अस्तित्ववादी उपन्यास नहीं लिखा जा सका। इसमें जीवन और अस्तित्व के जटिल प्रश्न को कथा के केन्द्र में रखा गया है। 'पुनर्नवा' में पांडित्य और लालित्य के संयोग से संभव रचनात्मक कल्पना की प्रधानता है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के 'कुल्लीभाट' (1939) और 'बिल्लेसुर बकरिहा' (1942) मनोहर श्याम जोशी का 'कुरु-कुरु स्वाहा' और विनोद कुमार शुक्ल का 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' की कोटि में परिगणित हो गया है। दूसरे शब्दों में, इस कोटि के उपन्यासों की आरम्भिक रचनाएं हैं निराला की 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा'। यशपाल का 'झूठा सच' (1958-1964) देश विभाजन की त्रासदी को बड़े फलक पर चित्रित करने वाला उपन्यास है।

सन् 60-70 के आस-पास के उपन्यासों में प्रेमचन्द के यथार्थोन्मुख आदर्शवाद की प्रधानता मिलती है। ऐसे उपन्यासों में 'तमस' (1973), 'मय्यादास की माड़ी' (भीष्म साहनी), 'जिन्दगीनामा' (कृष्णा सोबती); 'जुगलबंदी', 'ढाई घर', 'पहला गिरमिटिया' (गिरिराज किशोर) महत्त्वपूर्ण है। यहीं मन्नू भंडारी एक ओर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के तनाव के दुखद परिणामों के आइने में 'आपका बंटी' रचती हैं, तो दूसरी ओर राजनीति व दलितों के सामूहिक नरसंहार (बिहार) से प्रेरित 'महाभोज' लिखती हैं। यहां ध्यातव्य है कि 'महाभोज' एक राजनीतिक उपन्यास है। निर्मल वर्मा एक दूसरी प्रवृत्ति के उपन्यास 'वे दिन' रचते हैं, जिसकी परंपरा में हाल की रचना 'अंतिम अरण्य' भी शामिल है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में उपन्यास विधा में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। आज उत्तर आधुनिकता की चर्चा विश्व साहित्य के केन्द्र में है वहीं हिन्दी साहित्य के केन्द्र में स्त्री और दलित विमर्श एक आंदोलनात्मक रूप ले चुका है। उत्तर आधुनिकतावादी-विमर्श प्रेरित उपन्यास हैं 'कुरु-कुरु स्वाहा' और 'कसप' (मनोहर श्याम जोशी)। उत्तर आधुनिकता का केन्द्रीय विचार है इतिहास का अंत, विजन का अंत और ईश्वर की मौत (अंत)। 'नौकर की कमीज' और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' लिखकर विनोद कुमार शुक्ल निम्न मध्यवर्ग का नया विवरण रहित आख्यान प्रस्तुत किया है। 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' अपने खिलंदड़ेपन और काव्यात्मक कल्पना के लिए चर्चा में है। 'कलिकथा वाया बाई पास' लिखकर अलका सरावगी इतिहास, यथार्थ और कल्पना के संघटन से राष्ट्र का नया मुक्त आख्यान लिखती हैं। सांप्रदायिक ताकतों के उभार और राजनीति में धर्म के घालमेल से उपजे विषाक्त वातावरण में बाबरी मस्जिद ध्वंस और हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने रचनाकारों के लिए नवीन जमीन तैयार की है। दंगों की पृष्ठभूमि पर इधर अनेक उपन्यास आये हैं, जिसमें गीतांजलिश्री का 'हमारा शहर उस बरस' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। डायरी जैसा मुक्त गद्य-शिल्प उसकी नवीनता तो है ही, इतिहास की त्रासदी का अनुपम दस्तावेज भी है। 'चाक' (मैत्रेयी पुष्पा), 'अल्मा कबूतरी', 'शेष कादम्बरी' (अलका सरावगी), 'पायदान' (सोना चौधरी) स्त्री चेतना के लिए चर्चित हैं। हाशिये के लोगों को भी उपन्यास में स्थान मिला है, जिसमें 'जहाँ बाँस फूलते हैं', 'काला पहाड़', 'काला पादरी', 'गगन घटा घहरानी (मनमोहन पाठक) उपन्यास मुख्य हैं। दलित चेतना को लेकर भी अनेक उपन्यास रचे गये हैं, जिसमें आत्मकथात्मक उपन्यास 'जूठन' (ओम प्रकाश वाल्मीकि) का नाम सर्वोपरि है। दलितों की हिन्दू समाज में उनकी स्थिति का यथार्थ दस्तावेज है जयनन्दन कृत 'ऐसी नगरिया में केहि विधि रहना'। लोटन डोम की स्थिति से छः सौ वर्ष पूर्व कबीर परिचित थे। औद्योगिक मजदूरों पर भी अनेक उपन्यास मिलते हैं, जिसमें 'धार', 'सावधान नीचे आग है', 'पांव तल की दूब' (संजीव), 'सती मैया का चौरा' (भैरव प्रताप गुप्त), 'नरक कुंड में बास' (जगदीश चंद्र), 'समय बीता हुआ' (आशीष सिन्हा), 'श्रम एव जयते' (जयनंदन) आदि उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं। आज पुनः इतिहास और आख्यान उपन्यासों का प्रेरक स्रोत बन गया है।

उपन्यास के विविध भारतीय पर्याय

यहां उपन्यास के विविध भारतीय पर्यायों की चर्चा समीचीन है। उपन्यास के भारतीय पर्याय हैं, नवलकथा, कादम्बरी। बावजूद इन पर्यायों के अधिकतर भारतीय भाषाओं में 'नावेल' या 'रोमांस' की ही चर्चा मिलती है। 'उपन्यास' योरोपीय कही और समझी जाने वाली गद्य-विधा है। वैसे 'उपन्यास' शब्द बांग्ला भाषा से हिन्दी में आया है। काशीनाथ राजवाड़े ने 'कादम्बरी' को मराठी में उपन्यास का पर्याय माना है। बांग्ला में 'उपन्यास' शब्द ही चलता है, लेकिन बंकिमचन्द्र के उपन्यासों को 'रोमांस' भी कहा गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, ठाकुर जगमोहन सिंह ने अनुमान लगाया है कि अगर उपन्यास को 'उपन्यास' शब्द से संबोधित न कर किसी दूसरी भारतीय आख्यान से संबोधित किया जाता तो शायद अपनी जातीय स्मृति अधिक सुरक्षित रहती और अपनी परम्परा का प्रत्यभिज्ञान हमारी कथात्मक, सृजनात्मकता में कुछ और रंग लाता। लेकिन अनुमान और यथार्थ के बीच खाई बड़ी होती है। उपन्यास की अपनी विशिष्टता है जो किसी भी भारतीय 'उपन्यास' पर्यायी शब्दों में नहीं मिलती। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय या हिन्दी की आख्यान परंपरा से प्रभावित होकर भी 'उपन्यास' के पर्याय को नहीं स्वीकारा। वस्तुतः उपन्यास की योरोपीय विशिष्टता अपने-आपमें नवीनता लिए हुए है। हालाँकि प्रेमचंद ने उपन्यास पर तीन निबन्ध लिखे हैं और याद किया है कि बंगला ने बंकिम पैदा किया, गुजराती ने गोवर्धनराम त्रिपाठी, मराठी ने हरिनारायण आप्टे और उर्दू ने रतन नाथ सरशार, जो संसार के किसी महान उपन्यासकार से घटकर नहीं हैं।

गुजराती में 'नावेल' के ही वजन पर 'नवल कथा' शब्द चलता है। 'नवल कथा' में नवीनता पर बल है। रचनाकारों के मन में भी नवीनता सर्वोपरि थी; जैसे नर्मदाशंकर ने जब 'करणधलो' (1866) लिखा तो उनके मन में वाल्टर स्कॉट के उपन्यास थे। ध्यान देने की बात है कि 'नावेल' अंग्रेजी साहित्य में ही नहीं योरोप में भी नया था। ब्रिटिश उपनिवेश भारत में मुद्रण कला के विकास, गद्य के विकास, नये पाठकवर्ग के विस्तार के साथ उपन्यास आया तो 'नावेल' की प्रेरणा से ही। गुजराती 'नवल कथा' में कथा की एक ढीली-ढाली संरचना मिलती है। वैसे नर्मदा शंकर ने 'नावेल' के लिए 'वार्ता' शब्द का प्रयोग भी किया है। गोवर्धनराम त्रिपाठी का 'सरस्वती चंद्र' नामक रचना मुख्यतः तीन पीढ़ियों और तीन परिवारों की कथा है। यहाँ 'नवल कथा' रूप को मुक्त प्रसार प्राप्त हुआ है। वस्तुतः कथा में नवीनता न होती तो 'नवल कथा' सार्थक भी न होता। 'नावेल' 'नवल कथा' के मूल में नवीनता है।

उपन्यास का मराठी पर्याय 'कादम्बरी' है, जो संस्कृत की कादम्बरी के साथ-साथ उपन्यास विधा की वृतान्तोन्मुखता से भी प्रभावित है। 'यमुना पर्यटन' (बाबा पदमनजी, 1857) मराठी का पहला उपन्यास है। इस पर अंग्रेजी नावेल का प्रभाव है, क्योंकि इसके पहले से ही अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद होता आ रहा था। बंगला का पहला उपन्यास 'आलालेर घरेर दुलाल' (प्यारी चंद्र मित्र) 1858 में ही प्रकाशित किया गया। वस्तुतः भारतीय उपन्यास और स्वाधीनता संघर्ष में गहरा सम्बन्ध होने का प्रबल प्रमाण मिलता है और यह सम्बन्ध नवीनता का सूचक है।

नावेल के भारतीय पर्याय 'उपन्यास', 'नवल कथा', 'कादम्बरी' नावेल से मूलतः प्रभावित है, क्योंकि उसके बिना भारतीय समाज की उथल-पुथल, उपनिवेशवाद के प्रभाव और उसके साथ संघर्ष, समाज सुधार के आंदोलन अप्रभावित नहीं रह सके हैं। पूरा भारतीय

www.neerajbooks.com